Report

Geographical Survey of Udaipurwati

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS DEGREE IN GEOGRAPHY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE

NAWALGARH (RAJASTHAN)

PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY, SIKAR

SUBMITTED BY

SONIA KHICHI

M.A./M.Sc. PREVIOUS

SESSION: 2021-22

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE, NAWALGARH

CERTIFICATE OF COMPLETION

GEOGRAPHICAL SURVEY

In Partial Fulfillment of The Requirement For The Award of Masters Degree In Geography (M.A/M.Sc.)

Presented To

Sonia Khichi

For Completing Geographical Survey of

Udaipurwati

Prof. Shantilal Joshi
Head of Department

Dr. Satyendra Singh
Principal

सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार महाविद्यालय

नवलगढ़

सत्र– 2021–22

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर

भौगोलिक क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट

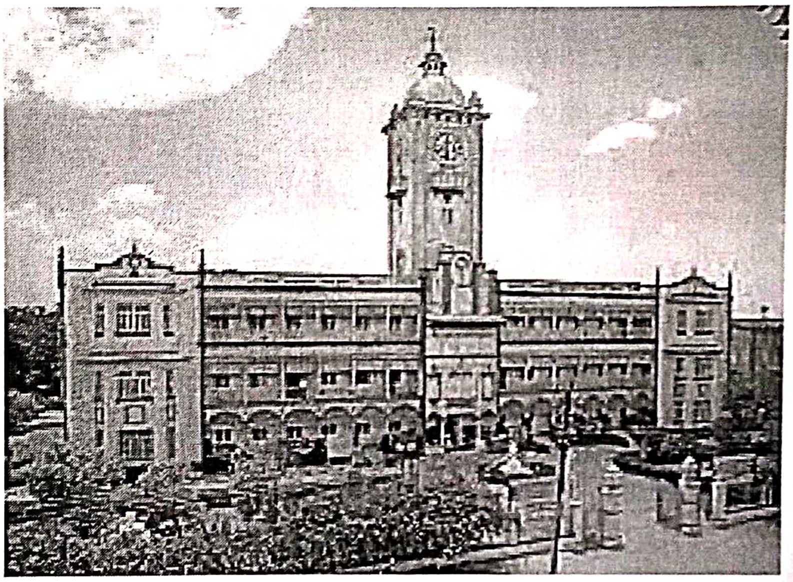

निर्देशक

प्रो. शान्तिलाल जोशी

सर्वेक्षणकर्ता

सोनिया खींची

एम.ए. प्रवेश (भूगोल विभाग)

रोल नं. ....

सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार कॉलेज

नवलगढ़–333042 (झुन्झुनू)

2021–2022

PROJECT REPORT

भूगोल विभाग क्षेत्रीय अध्ययन

निर्देशक :

....

भूगोल विभागाध्यक्ष

सर्वेक्षणकर्ता

नाम : सोनिया खिंची

रोल नं. ....

एम.ए./एम.एस.सी. प्रिवियस (भूगोल)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अनुक्रमणिका	पेज नं.
1	भारत (राजस्थान का मानचित्र)	1
2	उदयपुरवाटी का मानचित्र	2
3	भौतिक स्वरूप	2
4	अपवाह तंत्र	3
5	परिचय	3
6	भौगोलिक स्थिति	4
7	जलवायु	5
8	पर्यटन	6
9	हवेलिया	6
10	होटल गेस्ट हाउस	7
11	सिंचाई के साधन	8
12	जलसंधान के स्रोत	9
13	जन संख्या	10
14	अधिवास	11
15	स्वास्थ्य सेवांए	12
16	प्राकृतिक वनस्पति	12
17	मिट्टी	13
18	शिक्षा का स्तर	14
19	धर्म और समारोह	14
20	कृषि	16
21	पशु सम्पदा	18
22	मेले और त्यौहार	18
23	संचार मनोंरजन के साधन	19
24	व्यापार व वाणिज्य	20
25	परिवहन के साधन	21
26	शहरी विकास की नवीन योजनाएं	22
27	कस्बे की समस्याएं	23
28	कस्बे के विकास हेतु सुझाव	23

INDIA

भौतिक स्वरूप–

उदयपुरवाटी कस्बा अर्द्ध मरूस्थलीय क्षेत्र के अन्तर्गत आता हैं चूंकि इस कस्बा का अधिकांश भाग मैदानों के रूप में फैला हुआ है तथा कस्बे के उत्तर में पश्चिम से पूर्व दिशा में बालू का स्तूप है।उदयपुरवाटी कस्बे के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 10 प्रतिशत भाग मरूस्थलीय टिलों तथा 90 प्रतिशत समतल मैदानी भाग कें रूप में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त यहां पर कोई पर्वतीय भाग स्थित नहीं है। भौतिक स्वरूप के अन्तर्गत पर्वत पठार तथा मैदान का विश्लेषण किया जाता है। चूंकि इनका कस्बे के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

निर्देशांक: 27°50′46″N 75°16′05″E / 27.846°N 75.268°E

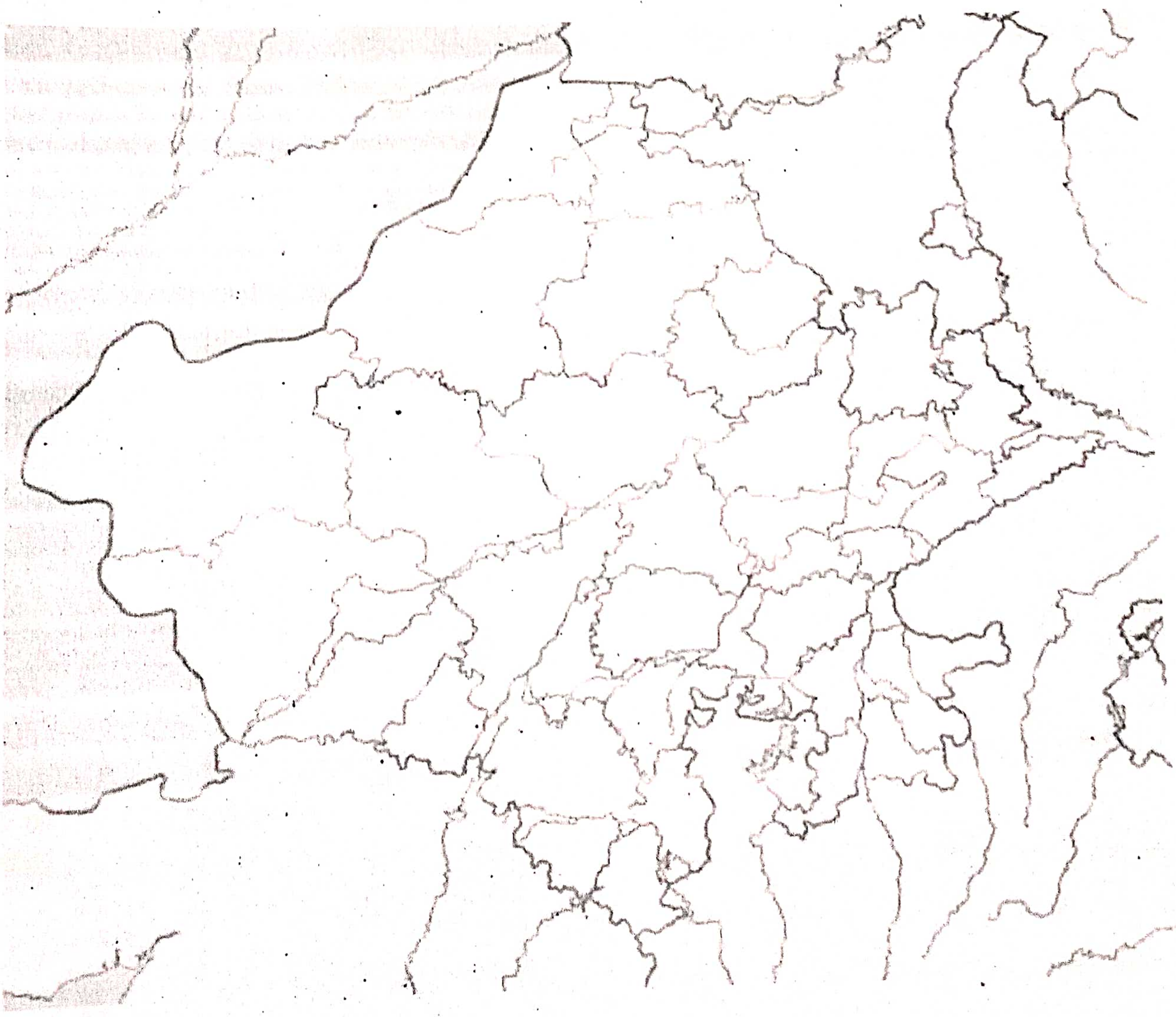

अप्रवाह तंत्र –

उदयपुरवाटी कस्बा आंतरिक अप्रवाह तंत्र के अन्तर्गत आता है। इसलिए यहां पर प्रमुख नदियों का अभाव बना हुआ है।

परिचय

उदयपुरवाटी कस्बा की स्थापना ठाकुर नवल सिंह जी शेखावत ने 1937 में की थी। मारवाड़ी समुदाय के कई महान व्यापरिक परिवार उदयपुरवाटी मूल के है। उदयपुरवाटी उच्च दीवारो (परकोटा) और अलग–अलग दिशाओं में चार परास्नातक (फाटकों), अगुना दरवाजा, बावड़ी दरवाजा (उत्तर में), मंडी दरवाजा और नानसा दरवाजा से मिलकर सुसज्जित घेरे में सुरक्षित किया गया था। उदयपुरवाटी का किला वर्ष 1937 में स्थापित किया गया था। यह अब काफी हद तक खंडहर बन चुका है। अग्नेय दिशा में केवल एक ही कमरें में सुंदर मीनाकारी तथा पुराने जयपुर तथा उदयपुरवाटी के चित्र है। यहां जाने के लिये एक मिठाई की दुकान से होकर गुजरना होता है, जिसके लिए शुल्क देना पड़ता है। इस किले का बाकी हिस्सा एक बहुत बड़ा फल तथा सब्जियों का बाजार और दो बैंक इस्तेमाल करती है।

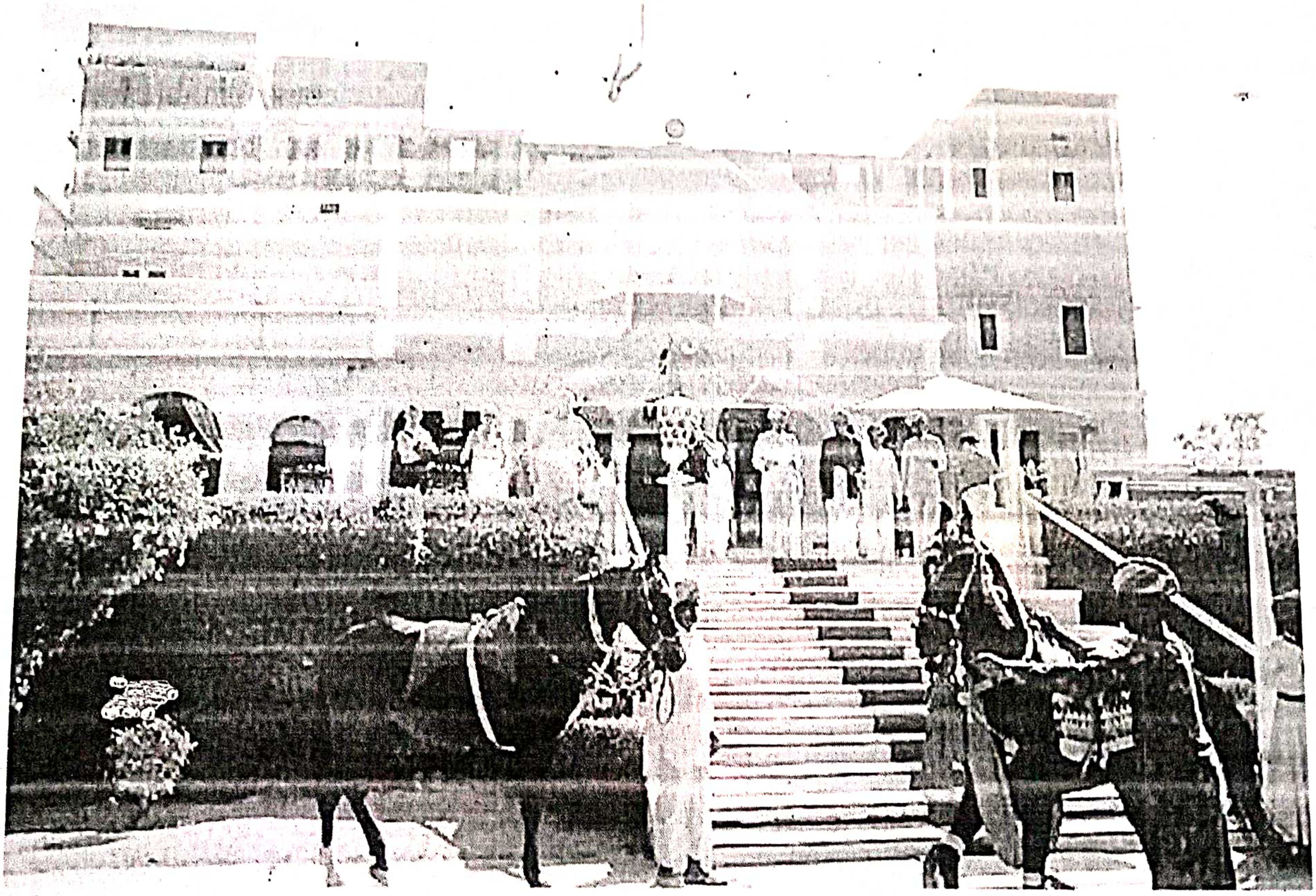

भौगोलिक स्थिति –

क्षेत्रीय अध्ययन का अक्षांशीय विस्तार 26 डिग्री 30 मिनट उत्तर से 27 डिग्री 50 मिनट उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 75 डिग्री 20 मिनट से 75 डिग्री 35 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उदयपुरवाटी कस्बा सीकर जिले की सांवली की प्रमुख पंचायत है। जिसकी लगभग जनसंख्या 5121 है। इसके उत्तर में सांवली स्थित है। तथा पूर्व में रशिदपुरा तथा दक्षिण में रामपुरा स्थित है। जिसके उत्तर में दूजोद कस्बा है।

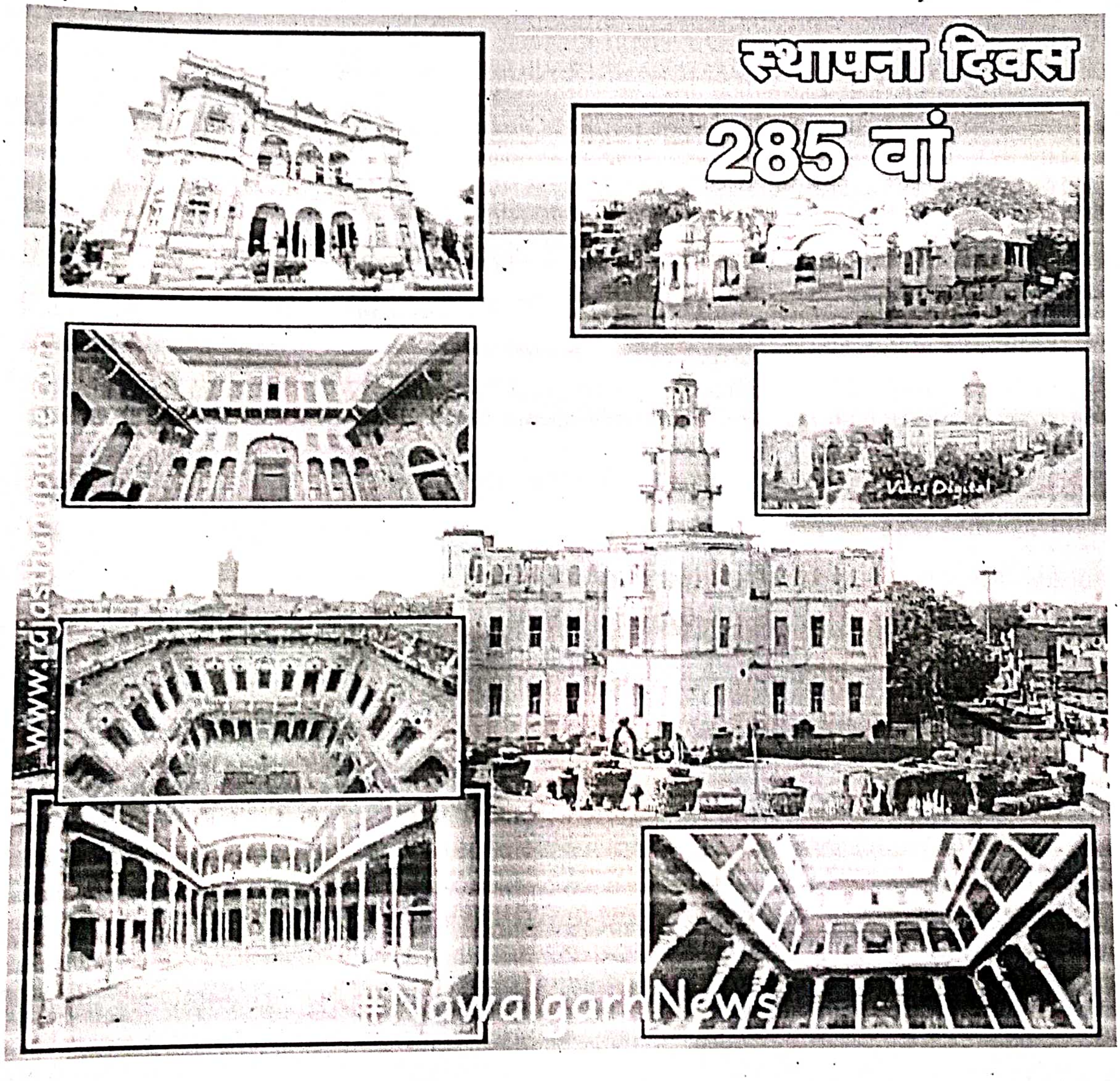

जलवायु

अध्ययन क्षेत्र की जलवायु बड़ी विषमता लिए हुए है। जलवायु के अन्तर्गत विशेष रूप से तापमान तथा वर्षा का अध्यन किया जाता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत वार्षिक वर्षा का औसत 500 मी.मी. है। परन्तु वर्षा का यह औसत कम या अधिक होता रहता हैं इस क्षेत्र में अधिकांश वर्षा दक्षिणी पश्चिमी अरब सागरीय मानसुनी पवनों द्वारा होती है जब अरब सागरीय मानसून की सक्रियता पर निर्भर करता है इसके अन्तर्गत शीत ऋतु में वर्षा उत्तरी पूर्वी शीतकालीन मानसूनी हवाओं द्वारा होती हैं परन्तु इस प्रकार की वर्षा बहुत कम हो जाती है जिसे स्थानीय भाषा में मावठ कहा जाता हैं मावठ रबी की फसल के लिए बड़ी लाभदायक होती है।

उदयपुरवाटी कस्बा राजस्थान के अर्द्धशुष्क जलवायु क्षेत्र के अन्तर्ग आता हैं गर्मीयों में यहां का तापमान बढ़कर लगभग 49 डिग्री सेन्टीग्रट मई जून में अंकित किया जाता है। फलतः यहां पर उत्तर पश्चिम से या पश्चित से पूर्व की ओर गर्म हवाएं चलती रहती है जिन्हें स्थानीय भाषा में लू कहते है इन्हें ताप लहरी भी कहा जाता है। इनके कारण कभी–कभी लोगों की मृत्यु हो जाती है। यहां पर ग्रीष्म ऋतु मार्च के बाद शुरू होती है। अतः मार्च अप्रेल के बाद तापमान बढ़ने लगते है तथा हवाएं उत्तर पूर्व में चलने लगती है। इन धूलभरी हवाओं की सर्वाधिक संख्या गंगानगर में होती है तथा सबसे कम झालावाड़ में होती है। राज्य में अक्टूबर तथा नवम्बर में हवाओं की गति मंद होती है तथा गुलाबी सर्दी का आगमन हो जाता है। आगे चलकर दिसम्बर जनवरी में तापमान 4 सेंटीग्रेड के लगभग पहुंच जाते है तथा कभी –कभी तापमान 0 सेंटीग्रेड से भी कम हो जाता है और पाला पड़ जाता है जिसके कारण फसलों का बड़ा नुकसान पहुंचता है इसके साथ कभी कभी खड़े बागवानी वृक्ष नष्ट हो जाते है तथा राज्य में उत्तरी पूर्वी हवाओं के आगमन से तापमान अत्यधिक गिर जाते है जिन्हें शीत लहर कहा जाता है जो पशुओं एवं कृषि फसलों के लिए हानिकारक होता है। इस क्षेत्र की जलवायु बड़ी विषमता एवं कठोरता लिए हुए है क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में तापमान अधिक शीत ऋतु में तापमान न्यूनतम बने रहते है अतः तापमान परिसर में 0 डिग्री सेन्टीग्रेड से 50 डिग्री सेंटीग्रेड का अन्तर पाया जाता है। हर तीसरे वर्ष क्षेत्र में अकाल व सुखा पड़ता है जो आर्थिक दृष्टि से बड़ा प्रतिकूल होता है।

पर्यटन

उदयपुरवाटी का किला, रूप निवास पैलेस, शीशमहल, पोदार कॉलेज टावर, लक्ष्मी नृसिंह मंदिर और गोपीनाथ जी मंदिर दर्शनीय आकर्षण है।

हवेलियाँ

शेखावाटी के राजपूत किलों एवं हवेलियों में बनी सुंदर फ्रेस्का पंटिंग्स दुनिया भर मे प्रसिद्ध है। इसी के चलते शेखावाटी अंचल को राजस्थान के आूपन आर्ट गलरी की संज्ञा दी जाती है। 1830 से 1930 के दौरान व्यापारियों ने अपनी सफलता और समृद्धि को प्रमाणित करने के उद्देश्य से सुंदर एवं आकर्षक चित्रों से युक्त हवेलियों का निर्माण कराया।इनमें भगतों की हवेली, छोटी हवेली, परशुरामपुरिया हवेली, छाउछरिया हवेली, सेकसिरया, मोरारका की हवेली एवं पोदार हवेली आदि प्रमुख हैं। हवेलियों के रंग शानों–शौकत के प्रतीक बने। समय गुजरा तो परम्परा बन गए और अब तो विरासत का रूप धारण कर चुके है।कलाकारां की कल्पना जितनीं उड़ान भर सकती थी, वह सब इन हवेलियों की दीवारां पर आज देखने का मिल जाता है।

उदयपुरवाटी किले के पश्चिमं मं हवेलियों का एक समूह है, जिसे आठ हवेलियां कहते है। इन हवेलियों पर बनी नक्काशी आधुनिकता के साथ मेल खाती है। एक चित्र में भाप का इंजन है तो अन्य में बड़े हाथी, घोड़े तथा ऊँट की प्रतिमायें है। इन हवेलियों के सामने है मोरारका हवेली, जिमें कुछ बहुत ही सुंदर चित्र है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी कथाओं पर आधारित सूक्ष्म चित्र भी है। इस हवेली में कोई नहीं रहता तथा उसका आंगन हमेशा बंद रता है। उत्तद दिशा में हेमराज कुलवाल हवेली, जो 1931 में बनवाई गयी थी। इस हवेली के द्वार पर गांधीजी तथा जवाहरलाल नेहरू के साथ कुलवाल परिवार के सदस्यों के चित्र है। अन्य देखने लायक हवेलियों है– भगतों की छोटी हवेली, डॉ. रामनाथ पोदार हवेली संग्रहालय इन सभी में भित्ती चित्रों की देखभाल की जाती है तथा नये चित्र शामिल होते रहते है।

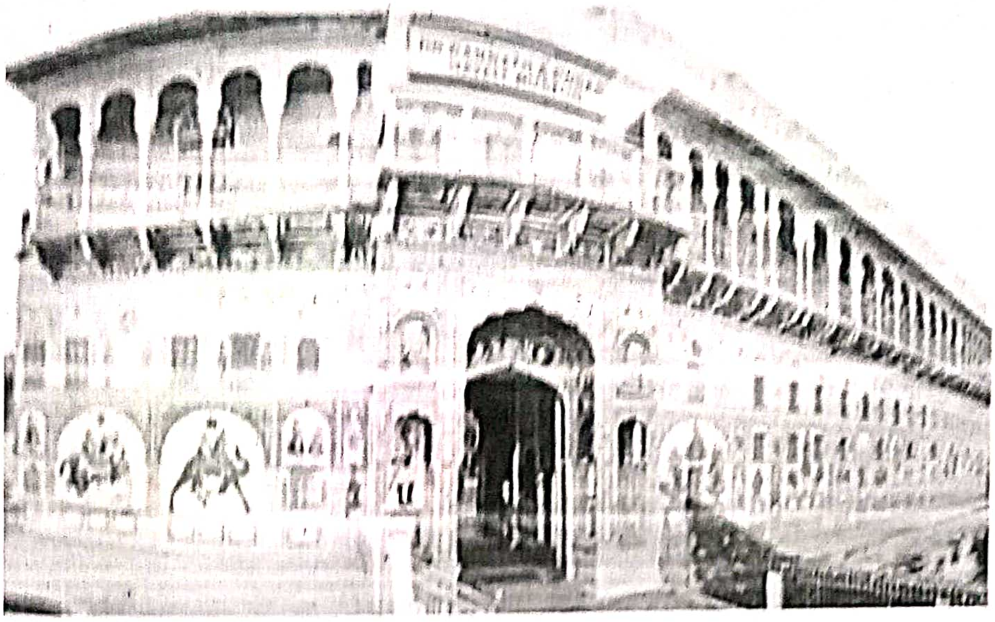

होटल एवं गेस्ट हाऊस

उदयपुरवाटी में ठहरने के लिए शानदार होटल एवं गेस्ट हाऊस उपलब्ध हैं। इनमें रूपनिवास पैलेस, होटल उदयपुरवाटी प्लाजा, आपणी होटल, होटल अपणी ढाणी, होटल सिंटी पैलेस, नवल होटल, तीज होटल आदि प्रमुख हैं।

पर्यटन स्थल – रंग-बरंगा बाजार तथा अनगिनत हवेलियां और महीन वास्तुकला के साथ यहां का विशाल किला इस जग को रोचक दर्शन स्थल बनाते है। यहां कुछ मुख्य हवेलियां है जैसे– आनन्दीलाल पोदार हवेली, आठ हवेली, होड़ राज, पाटोदिया हवेली, जहां पर्यटक जा सकते है। यहां पर दो किले भी है। महला का होटल रूप निवास एक सुंदर विरासत संपत्ति है और यहां आधुनिक सुविधायें उपलब्ध हैं। इस महल में विशाल रंगीन कमरें, आरामदेह व्यवस्था, अदब के साथ आतिथ्य तथा संकल्पना पर आधारित शाम का मनोरंजन और साथ में भोजन भी उपलब्ध है।

अग्नेय दिशा में केवल एक ही कमरें में सुंदर मीनाकारी तथा पुराने जयपुर तथा उदयपुरवाटी के चित्र हैं। यहां जाने के लिये एक मिठाई की दुकान से होकर गुजरना होता है, जिसके लिए शुल्क देना पड़ता है। इस किले का बाकी हिस्सा एक बहुत बड़ा फल तथा सब्जियों का बाजार और दो बैंक इस्तेमाल करती हैं।

सिंचाई के साधन –

उदयपुरवाटी कस्बा में 629 हैक्टर मं से 515 हैक्टर भूमि कृषि योग्य बनी हुई है। यहां पर सिंचाई के साधनों के रूप में कुएं, नलकूप इत्यादि बने हुए है। जिनमें से कुओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही हे। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा सघन कृषि के कारण उदयपुरवाटी कस्बा का भूमिगत जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है तथा भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन के कारण भूमिगत जल के स्रोत समाप्त होने के कगार पर आ गये है इस समस्यां से निजात पाने के लिए ग्राम पंचायत तथा ग्राम स्तर पर वर्षा के पानी को सीधा ही भूमिगत चट्टानों तक रिचार्ज कुओं के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है जो जल संरक्षण की दृष्टि से शुभ संकेते है।

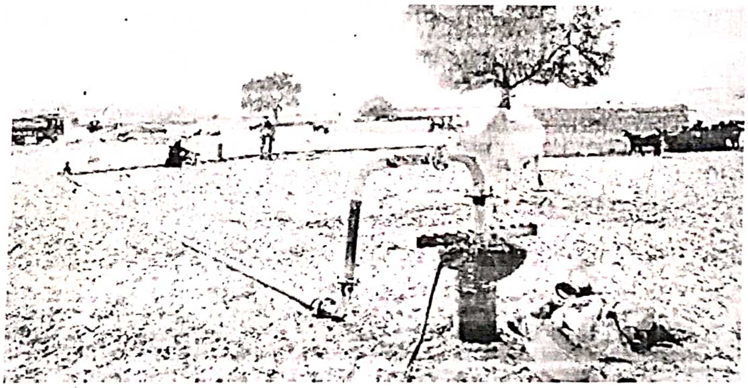

जल संसाधन के स्रोत –

उदयपुरवाटी कस्बा में सिंचाई के साधनों में प्रमुखतयाः कुए नलकूप सम्मिलित है। आबादी क्षेत्र में 45 नलकूप व करीब 15 टंकिया बनी हुइ है। जबकि भूमिगत जलस्तर के तेजी से निचे गिर जाने के कारण पानी देने की क्षमता कम हो गई है वर्षा अभाव के कारण तथा भूमिगत जल स्तर के आवश्यकता से अधिक उपयोग होने के कारण प्रतिवर्ष जलस्तर लगभग 1.5 – 2 मीटर निचे गिर रहा हैं यद्यपि इसी प्रकार भूमिगत जल का दोहन होता रहा तो निकट भविष्य में पेयजल की समस्या विकट रूप धारण कर लेगी। इस आबादी क्षेत्र में कुल 131 कुएं तथा 46 नलकूप तथा हैण्ड पम्प है जिनका विवरण तालिका संख्या 1 में दिया गया है।

जनसंख्या –

उदयपुरवाटी कस्बा में सघन जनसंख्या का जमाव पाया गया है आवादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा वाहरी भागों में (खेत में) जनसंख्या का विवरण कम है यहां की कुल जनसंख्या 44280 है। जिनमें से एस.सी. के लोग 9540 एस. टी. 540 एस.वी.सी. 800, ओ.वी.

सी. 18600 सामान्य लोगों की संख्या 7000 अल्पसंख्याक 7800 है। इस कस्वा में पाई जाने वाली जनसंख्या का विवरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है –

तालिका संख्या – 2

Udaipurwati Religion Data 2011

Town	Population	Hindu	Muslim	Christian	Sikh	Buddhist	Jain	Others	Not Stated
Nawalgarh	63,948	58.71%	41.09%	0.13%	0.00%	0.01%	0.03%	0.00%	0.03%

उपरोक्त जनसंख्या के आंकड़ो को मिश्रित दण्ड आरेख द्वारा दर्शाया जा सकता है।

Population of Udaipurwati

Population	Males	Females
44280	24150	20130

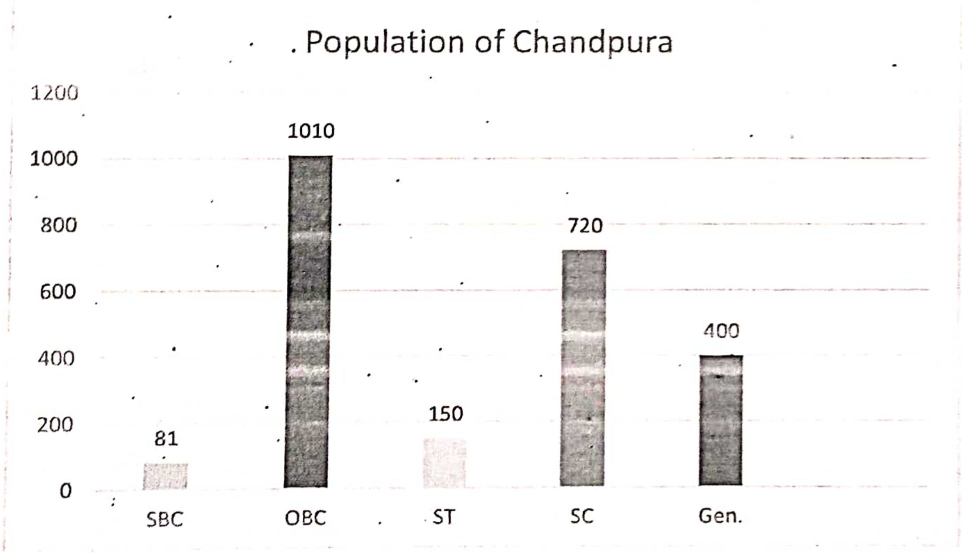

अधिवास–

उदयपुरवाटी कस्बा में अधिवासों का प्रतिरूप चौंक पट्टीनुमा है इसके साथ–साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप या मिश्रित प्रतिरूप में भी बसे हुए है। घुमचच्कर से बाजार तक घुमावधार मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर एवं दुकाने बनी हुयी है अधिकांश घर व दुकाने सीमेन्ट कंकरीट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास है परन्तु कुछ संख्या में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग, जिनके घर पक्की ईटों द्वारा निर्मित है इस कस्बा में 1 मंजिल से लेकर बहु मंजिल तक इमारते बनी हुई है। यहां की हवेलियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जलवायु का घेरों की बनावट तथा प्रकार में विशेष ध्यान रखा गया है। कस्बा में 85 प्रतिशत पक्के मकान 10 प्रतिशत अर्द्ध पक्के तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है।

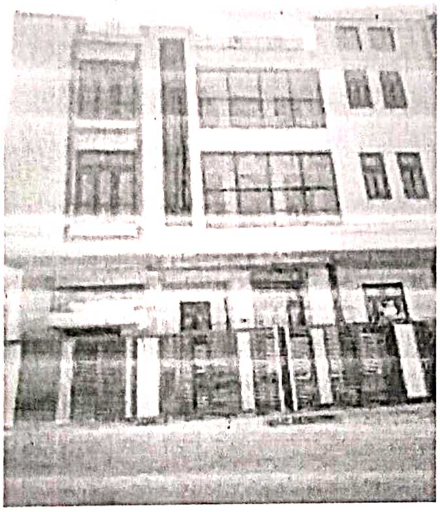

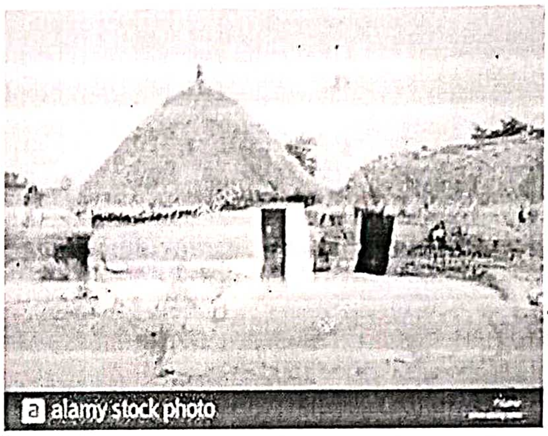

उपरोक्त आरेख द्वारा स्पष्ट होता है कि चन्दपुरा ग्राम में एस.सी., एस.टी. तथा अन्य की संख्या सर्वाधिक है ताकिला संख्या 3 में ग्राम के कुल परिवारों को दर्शाया गया है।

कस्बे में कुल परिवारों की संख्या 9000 है जिसमें से बी.पी.एल. 1000 तथा ए.पी.एल. की कुल संख्या 8000 है कुल 45 वार्ड है।

स्वास्थ्य सुविधाएं–

उदयपुरवाटी कस्बा में जिला अस्पताल सरकारी तथा कई प्राईवेट अस्पताल है। स्वास्थ्य के सुविधाएं उदयपुरवाटी में बहुत अच्छी है। जितनी भी सरकारी योजना है उन सभी का लाभ मिलता है। जिला अस्पताल में सभी जांच व इलाज व दवाइयों फ्री मिलती है।

प्राकृतिक वनस्पति–

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ–साथ यहां पर ऊष्ण कटिबंधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाती हैं चूंकि नवलगगढ़ अर्द्ध शुष्क जलवायु के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरूस्थलीय वनस्पति पाई जाती हैं। प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायु तथा मुदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है इस क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी, बबूल, कंटिली झाड़िया, नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, पीपल, अमरूद इतयादि फलों वाले पोधे भी उपलब्ध है। वर्तमान

समय में यहां पर बागवानी पौधे के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। परिणामतः घरें तथा खेतों में बड़े पैमान पर फलदार पौध विकसित हो रहे है। यहां पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध है जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पते गिरा देते है चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।

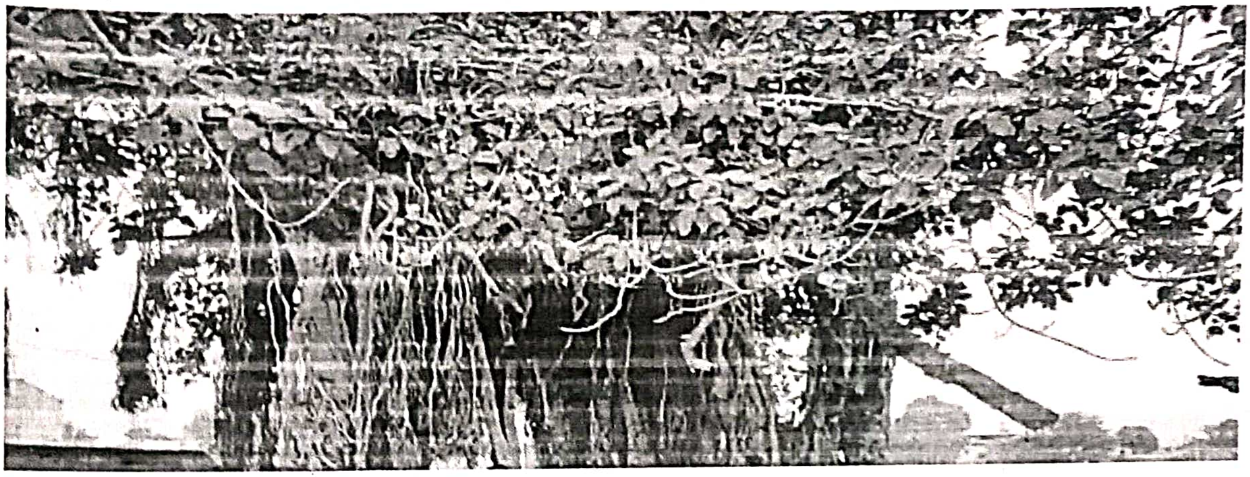

मिट्टी

अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी अधिकाशतः बलूई तथा चिकनी मिट्टी है चूंकि मिट्टी का रंग संरचना बनावट मूल चट्टानों की संरचना पर निर्भर करता है। इस मिट्टी में पौषक तत्वों की कमी होने पर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग द्वारा पूर्ति की जाती है। उदयपुरवाटी कस्बा का कुल क्षेत्रफल 6502 हैक्टर है जिनमें से कृषि योग्य क्षेत्रफल 3000 हैक्टर है। चूंकि 20 प्रतिशत भू–भाग ही कृषि योग्य है। अतः कूल भूमि का 10 प्रतिशत भाग बिना उपयोग के मार्गों तथा जोहड़ के रूप में पड़ा हुआ है। मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया द्वारा अध्ययन क्षेत्र की मृदा अनुपजाऊ होती जा रही है।

सघन कृषि के कारण मृदा में निरंतर पौषक तत्वों में कमी आ रही है। इस कमी को दूर करने के लिए रासायनिक उर्वरकों जैविक व गोबर की खाद का उत्पन्न कराने के काम आता है।

शिक्षा का स्तर

उदयपुरवाटी कस्बा में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है। प्राचीन काल से ही यहां पर शैक्षणिक दृष्टि सेठों की मेहरबानी रही है। इसलिए ही शेखावाटी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है। पिलानी, लक्ष्मणगढ़ और उदयपुरवाटी ने शैक्षिक परिदृश्य को संवारेन का काम किया है। राजस्थान के सबसे पहले महाविद्यालय सेठ ज्ञानीराम बंसीधर पोदार महाविद्यालय, नवलगढ़ की स्थापना यहां 1921 में हुई थी। स्वयं महात्मा गांधी जी इस कॉलेज के ट्रस्टी थे। यह मानविकी, समाज विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य आदि विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा कार्य में संलग्न राजस्थान के अग्रणी संस्थानों में से है। उदयपुरवाटी में सीबीएसई से मान्यता प्राप्त स्कूलों के अलावा पॉलोटेक्निक एवं डण्डलोद इंजीनियरिंग कॉलेज भी है। साथ ही यहां एक सरकारी कॉलेज भी है। उदयपुरवाटी में वेबविद्या डिजिटल मार्केटिंग इंस्टिट्यूट है, जो डिजिटल मार्केटिंग और स्किल डेवलपमंट जेसे मॉर्डन कोर्स प्रदान करता है। इस इंस्टीट्यूट में वेवसाइट डिजाइन करना ऑनलाइन एड करना जैसे 32 मोड्यूल सिखाये जाते है।

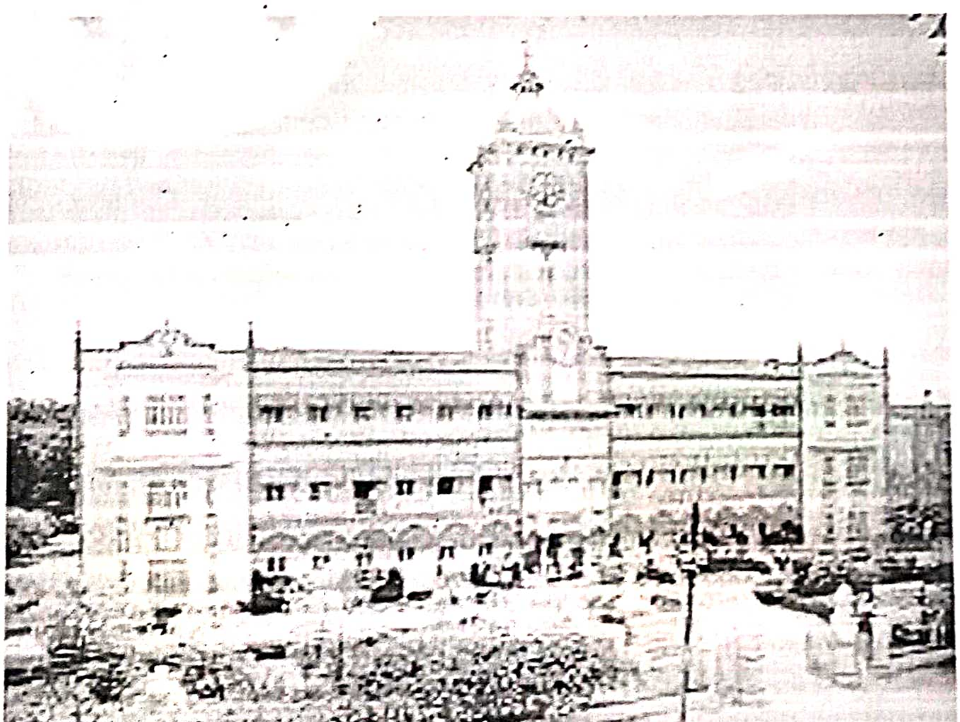

पोदार महाविद्यालय, नवलगढ़

सरकारी महाविद्यालय, उदयपुरवाटी

धर्म और समारोह

सभी प्रमुख हिन्दू और मुस्लिम त्योहारों को मनाते हैं। प्रमुख हिन्दू त्यौहारों में से कुछ है – होली, दीपावली, रामनवमी, मकर संक्रांति, रक्षाबंधन, बाबा रामदेवजी जयन्ती, सावन, तीज और गोगा, सहकर्मी, गणगौर आदि।

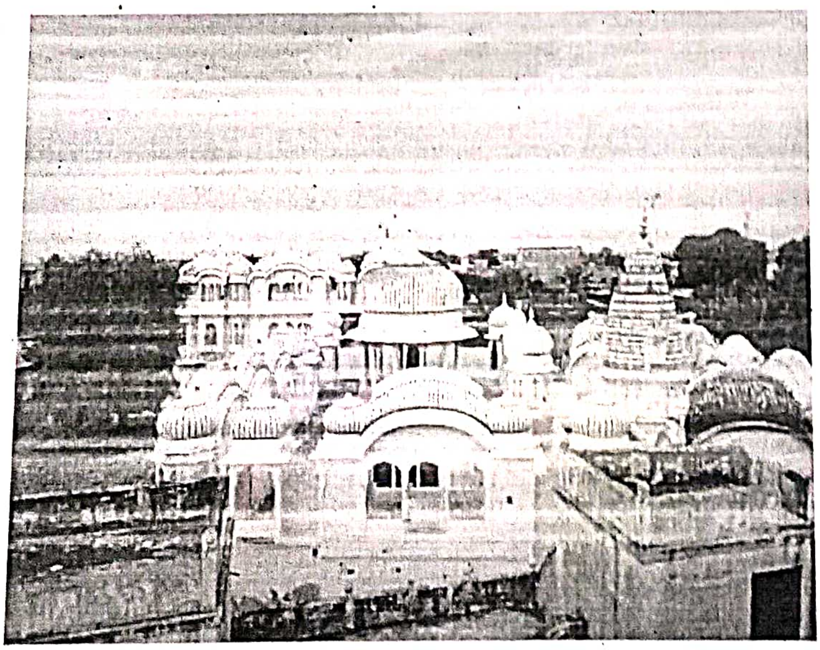

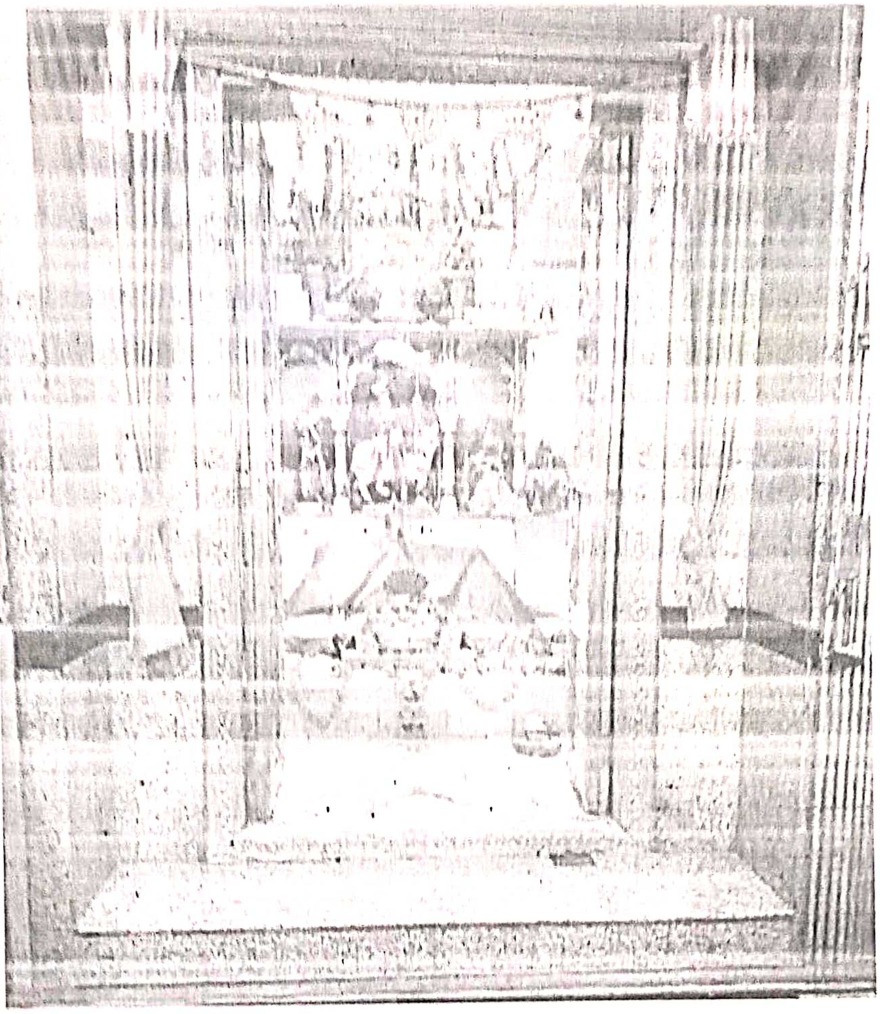

बाबा रामदेव जी मन्दिर

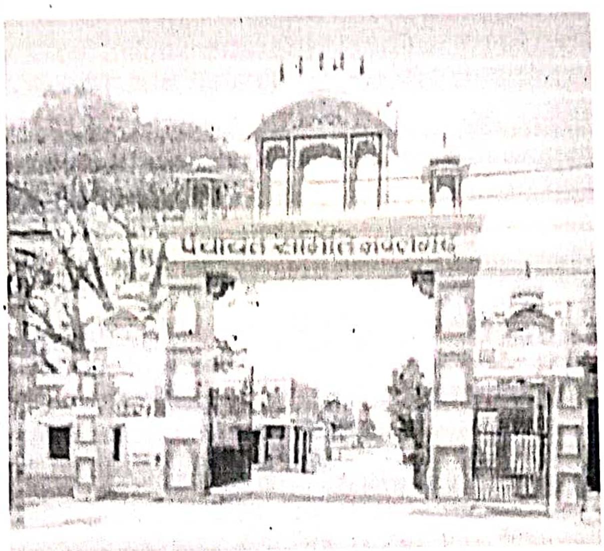

कृषि–

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी तथा खरीफ की फसले उत्पन्न की जाती है तथा कस्बा के आसपास छोटे मैमाने पर जायद की फसले भी विकसित की जा रही है। रबी की फसल के अन्तर्गत गेहूं, जौ, चना सरसों मैंथी तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत बाजरा चौला मूंग तथा ग्वार व ज्वार तथा जायद की फसल के अन्तर्गत तरबूज खरबूजा ककड़ी टिन्डा भिन्डी इत्यादि विकसित किये जाते है वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकी तथा पद्धतियों पर आधारित फसलें उगायी जाती है रबी के फसल अक्टूबर–नवम्बर में बोई जाती है तथा मार्च अप्रेल में काट ली जाती है यह फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित है तथा सिंचाई का कार्य कुएं नलकूप के द्वारा किया जता हैं खरीफ की फसल जुलाई अगस्त में बोई जाती है तथा अक्टूबर में काट ली जाती है इस प्रकार की फसल का उत्पादन कस्बा के सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर किया जाता हैं खरीफ की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर करती है परन्तु वर्षा समय पर न होने पर तथा वर्षा की मात्रा कम होन पर फसल का पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाती हैं यायद की फसल की बुआई रबी के फसल के पश्चात की जाती है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसित की जाती है।

पशु सम्पदा

उदयपुरवाटी कस्वा पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यहां पर उतम नस्ल की गायें भेड़ वकरी ऊंट, गधे पाये जाते है। चन्दपुरा गोशाला में एक ट्युबवैल व नलकूप बना हुआ है जो गायों को पानी तथा चारा उपलब्ध कराता है।

प्रमुख मेले व त्यौहार –

उदयपुरवाटी कस्वा में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं तथा इन लोगों की भिन्न–भिन्न धर्मो में आस्था होने पर यहां पर कई प्रकार के मेले उत्सव समय–समय पर आयोजित किये जाते हैं, श्यामजी का मेला वर्ष में 2 बार लगता है तथा कस्वा में प्रतिवर्ष संतोषी मां का मेला गणगौर का मेला आदि लगते है। गावं में विभिन्न धर्मों के लोगों के निवास करने के कारण यहां पर होली, दिपावली, दशहरा, रक्षा–बन्धन, तीज आदि त्यौहार समय–समय पर मनाये जाते है।

संचार व मनोरंजन के साधन –

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एंव मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता हैं चूंकि उदयपुरवाटी कस्बा में विभिन्न कंपनियां से सम्बन्धि है एक पोष्ट आफिस तथा 85 प्रतिशत लोगों के घरों में टेलीविजन गति के संचार के साधनों में मोबाईल सुविधा उपलब्ध है। कस्बा के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है। जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी.टी.सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा है।

व्यापार व वाणिज्य

कस्बा की अधिकांश जनसंख्या द्वितीयक तृतीयक व्यवसायों में संलग्न है। इस कस्बा में कृषि पशु पालन आदि आधुनिक तकनीकी पर आधारित है। इस क्षेत्र के कस्बे वासी भारत के बड़े–बड़े गनरों में औद्योगिक कार्यों से जुडें हुए है यहां के सेठ, साहुकारों ने कस्बा का विकास करके कस्बो में औद्योगिक भू दृश्य विकसित किया है। इस कस्बा में बैंकिग, संचार तथा अन्य आर्थिक कार्यों में लोगों की अच्छी रूचि बनी हुई है। यहां के कृषि उत्पादों में जैविक उत्पादों में जैविक उत्पाद पर विशेष ध्यान दिया गया है।

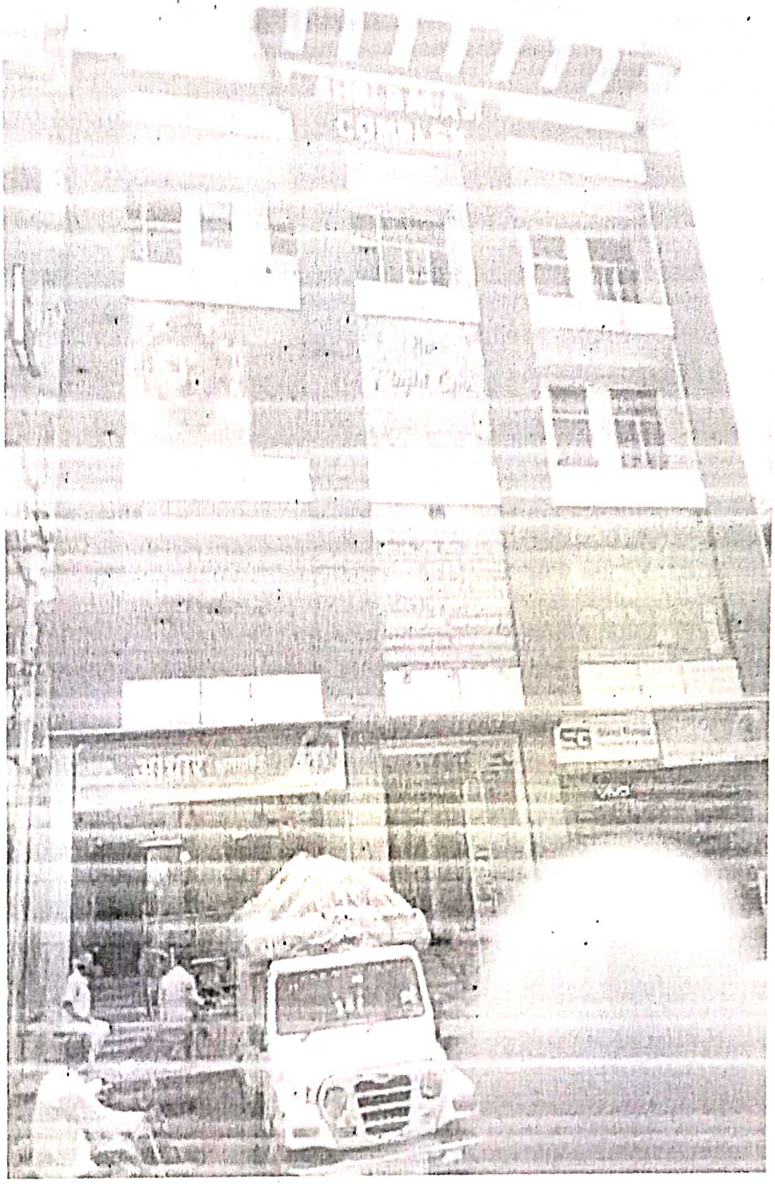

परिवहन के साधन –

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मंगाने अतिरिक्त उत्पाद को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारों के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। उदयपुरवाटी कस्बा सड़क व परिवहन से जुड़ा हुआ है।

राज्य राजमार्ग कस्बा की सीमा को दक्षिण से उतर दिशा की ओर स्पर्श करता हुआ गुजरता है जो कस्बा को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है।

कस्बा के अन्दर 50 किलोमीटर पक्की सड़क (डामर युक्त), 150 किलोमीटर सीमेन्ट सड़क तथा 10 किलोमीटर कच्ची पड़ौसी गोंवो, गनरों, जिलो तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती है।

उदयपुरवाटी शहर सीकर एवं झुन्झुन जिला मुख्यालय से लगीाग समान दूरी पर स्थित है। यह झुन्झुनू से करीब 39 किलोमीटर दूर है, जबकि सीकर से मात्र 30 किलोमीटर। जयपुर, दिल्ली, अजमरे, कोटा और बीकानेर से यह सड़क मार्ग से सीधे जुड़ा हुआ है। जयपुर यहां से 140 किलोमीटर है, जबकि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली करीब 272 किलोमीटर की दूर पर स्थित है। जयपुर–लहारू मार्ग पर स्थित उदयपुरवाटी ब्रॉडगेज रेल लाइन से जुड़ा हुआ है। हैरिटेज ऑन व्हील्स, यह एक लक्जीर अूरिस्ट ट्रेन है, जो नवलगढ़ और शेखावाटी को करीब से देखने का अवसर प्रदान करती है।

शहरी विकास की नवीन योजनाएं–

राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं द्वारा कस्बा के विकास के लिए कई योजनाएं संचालित है भारत की सबसे बड़ी शहरी विकास योजना महा नरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण योजना गारण्टी कार्यक्रम) इस योजना में 200 व्यक्ति कार्यरत है तथा कस्बा में 45 आंगनबाड़ी केन्द्र स्थापित है जो प्राईमरी स्कूलों को पोषाहार की व्यवस्था सुनिश्चित करते है। इसी प्रकार शहरी स्तर पर स्वास्थ्य सम्बन्धी कई कार्यक्रम संचालित किए

जाते है। इसी प्रकार ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य सम्बन्धी कई कार्यक्रम संचालित किए जाते है। ग्राम के मुखिया द्वारा कच्ची तथा पक्की सड़कों को निर्माण करवाया जा रहा है तथा कस्बों में किसानों को खाद बीज उपलब्ध करवाने के लिए सहकारी समितियां खोली गयी है समय–समय पर कस्बा में जिला स्तर द्वारा विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित की जाती है इन्हें शुरू कर पेयजल, चिकितसा स्वास्थ्य सुविधाएं तथा पशुओं के लिए चारोगाहों की व्यवस्था की जाती है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों के लिए निःशुल्क आवास भोजन तथा वस्त्र की व्यवस्था की जाती है।

कस्बे की समस्याएं –

उदयपुरवाटी कस्बा के भौगोलिक सर्वेक्षण के अध्ययन से निष्कर्ष निकला है कि इस कस्बा में शिक्षा चिकित्सा पेयजल तथा स्वास्थ्य इत्यादि की सुविधा उपलब्ध है फिर भी बढ़ती हुई आबादी को देखते हुए यह सुविधा पर्याप्त मात्रा में नहीं है। आये दिन बिजली तथा पेयजल की समस्या का सामना ग्रामवासियों को करना पड़ता है। इस कस्बा की समस्याओं का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया जा सकता है।

1. कस्बा की कृषि योग्य भूमि सघन कृषि तथा अपरदन के कार्यो द्वारा निरन्तर अनुपजाऊ होती जा रही है। यदि इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में खाद्यान संकट उत्पन्न हो जायेगा।
2. कस्बा में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदुषण के अन्य कारकों द्वारा कस्बा का प्राकृतिक सौन्दर्य व वातावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ने लगा है।
3. कस्बा में चारोगाहों के अभाव के कारण मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है।
4. वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।
5. अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण कस्बा में गरीबी का स्तर बढ़ने का स्तर बढ़ने लगा है। बी.पी.एल. तथा ए.पी.एल. परिवारों की संख्या में वृद्धि होने लगी है। कस्बा में शराब

की दुकानें तम्बाकू व गुटखों की दुकाने जगह–जगह पर बनी हुई है। जिससे शहरवाशियों को धुम्रपान की आदत पड़ गयी है।

6. कस्बा में नालियों की सफाई समय–समय पर नहीं होने के कारण गन्दगी फैलती रहती है। जिसके कारण मौसमी बिमारियों को प्रकोष बना रहा है।

7. नवलगढ़ कस्बा में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जिसके कारण शहर की देशी विदेशी संस्कृति एवं परम्परा खो रही है।

कस्बा के विकास हेतु सुझाव

कस्बा के विभिन्न भौगोलिक तथ्यों का विश्लेषण करके यह निष्कर्ष निकाला गया है कि राज्य सरकार तथा केन्द्र द्वारा संचालित योजनाओं को समय–समय पर क्रियान्वित करके कस्बा के विकास स्तर को बढ़ाया जा सकता है। कस्बा में समुचित मात्रा में प्रशासनिक तन्त्र को सक्रिय करके विदेशी पर्यटकों का सुरक्षा प्रदान किये जाने से कस्बा में पर्यटकों की संख्या निरन्तर बढ़ेगी जिसके कारण ग्रामवासियों को विदेशी आय प्राप्त होगी। कस्बा के गन्दे पानी तथा कुडा कचरा निस्तारण के लिए पर्याप्त मात्रा में साधन उपलब्ध करवाये जाने चाहिए। जिससे कस्बा के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव हनीं पड़े इसी बात को

ध्यान मे रखकर कुड़ा कचरा पात्र रखे जाने चाहिए। इसके साथ–साथ कस्बा में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम संचालित करने चाहिए कुछ असामाजिक तत्व शराब तथा तम्बाकू का उपयोग करके कस्बा के वातावरण को बिगाड़ने का प्रयास करते है। ऐसे लोगों के लिए कठोर सजा का प्रावधान करना चाहिए बढ़ती हुई जनसंख्या वृद्धि तथा घटती हुई सुविधाओं के अभाव के कारण कस्बा को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। घरों के गन्दे पानी को तथा सिवरेज के लिए सुरक्षित स्थान बना देने चाहिए तथा समोच्य रेखाओं को ध्यान में रखकर कस्बा के अप्रवाह तन्त्र को नगर नियोजक योजना के तहत विकसित किया जाना चाहिए।

यातायात के साधनों, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण इत्यादि पर विशेष ध्यान देकर ग्रमवासियों के द्वारा समाज सेवकों का सहयोग लेकर उचित समाधान निकालना चाहए।

सर्वेक्षण कर्ताओं का सुझाव है कि जनसंख्या वृद्धि पर पूर्णतया नियन्त्रण के उपाय होने चाहिए क्योंकि जनसंख्या वृद्धि किसी भी शहर के आर्थिक विकास में बाधक होती है तथा कस्बा में विद्यमान समस्याओं पर समस्याओं से सम्बन्धित शिविर लगवाने चाहिए।

प्रस्तुतकर्ता

नाम– सोनिया खींची

रोल नं.

एम.एम. प्रवेश (भूगोल विभाग)

सेठ जी.बी. पोदार कॉलेज, नवलगढ़

DEPARTEMT PF GEPGRAPHY

SETHGYANIRAMBANSIDHARPODAR(P.G.)COLLEGENAWALGARH JHUNJHUNU)

SESSION-2018-19

SOCIAL ECONOMIC SURVEY OF GOTHARA

1. NAME OF THE SURVEY VIEWER
2. HEAD OF FAMILY
3. NUMBER OF FAMILY MEMBERS
4. LITERACY STATUS & OCCUPATION OF THE FAMILY

NAME OF FAMILY MAMBERS	AGE	EDUCATION	OCCUPATION	MONTHLY INCOME

5. HANDICAPED

6. RELIGION

7. AGRICULTURE STATUS:-

S.N	NAME OF CROP	YIELD PER HECTAREIN QUINTAL	TOTAL PRODUCATION IN QUINTAILS	CONSUMPTION	PRODUCATION SURPLUS/SOLD/DEFICIT
	TOTAL				

8. DETAILS OF EXPENDITURE ANNUAL/MONTHLY

S.N	DETAILS OF CONSUMPTION	CONSUMPTION	EXPENDITURE	LOAN ETC.
1.	SUGAR			
2.	FLOUR			
3.	VEGETABLE			
4.	GHEE, MILK, OIL			
5.	MEAT			
6.	IRRIGATION			
7.	REVENUE ETC			
8.	HOUSE RENT			
9.	CLOTHING			
10.	MEDICINES			
11.	PHONE			
12.	MANAGE			
13.	PULSES			
14.	TEA COFFEE			
15.	SPICES			

5. HANDICAPED

6. RELIGION

7. AGRICULTURE STATUS:-

S.N CROP	NAME OF	YIELD PER HECTAREIN QUINTAL	TOTAL PRODUCATION IN QUINTAILS	CONSUMPTION	PRODUCATION SURPLUS/SOLD/DEFICIT
	TOTAL				

8. DETAILS OF EXPENDITURE ANNUAL/MONTHLY

S.N	DETAILS OF CONSUMPTION	CONSUMPTION	EXPENDITURE	LOAN ETC.
1.	SUGAR			
2.	FLOUR			
3.	VEGETABLE			
4.	GHEE, MILK, OIL			
5.	MEAT			
6.	IRRIGATION			
7.	REVENUE ETC			
8.	HOUSE RENT			
9.	CLOTHING			
10.	MEDICINES			
11.	PHONE			
12.	MANAGE			
13.	PULSES			
14.	TEA COFFEE			
15.	SPICES			

16.	OTHERS			
	TOTAL			

9. WHERE DO YOU GO FOR THE FOLLOWING FACILITIES

S.N	FACILITIES	WITH IN VILLAGE	OTHER PLACE	MODE OF TRANSPORT	NO. OF DAYS OF VISIT
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					
9.					
10.					
	TOTAL				

10. ANIMAL RESOURSES

(A) COW (B) BUFFALOES (C) GOATS

(D) HORSES (E) SHEEP (F) OTHERS

11. MONTHLY PRODUCATION

(I) MECHANISED

(II) SEMI MECHANISED

(III) MIDED FARMING

(IV) NURSERY FARMING

(V) PLANTATION

(VI) COMMERCIAL

12. METHOOD OF MARKETING (Put Marks)

(I) DAILY ( )

(II) WEEKLY ( )

(III) HALF-MONTHLY ( )

(IV) MONTHLY ( )

13. METHOD OF SELLING PRODUCT (Put Marks)

(I) TO CONSUMER

(II) TO DEALER

(III) IN VILLAGE IT SELF

(IV) DO PEOPLE COME FROM OUT SIDE

(V) DO YOU GO TO MANDI

(VI) IF YES WHAT ARE THE MEANS OF TRANSPORT

....

14. WITCH FERTILIZER DO YOU USE?

NITROGEN, PHOSPHATE, POTASSIUM

15. WHICH MANURE DO YOU APPLY?

COW DUNG (COMPOST OTHERS)

16. DO YOU KNOW THAT YOU ARE USING THE CORRECT FERTILIZER ACCORDING TO SELF CULTIVATED CROPS YES/NO

17. WHAT IS THE SOURCE OT IRRIGATION (Put Marks)

(I) CANAL

(II) TUBE WELL

(III) WELL

(IV) POND TANK

(V) RIVER

18. DEPTH OF WATER LEVEL

(I) SUMMER (II) WINTER (III) RAINY SEASON

19. WHATS IS THE SOURCE OF DRINKING WATER

(A) HANDPUMP (B) WELL (C) TUBE WELL

(D) TANK (E) CANAL (F) RIVER

20. FOOD HABITS?

HABITS	CONSUMPTION (PER MONTHS)	SUMMER	WINTER	RAIN
FOOD GRAINS				
VEGETABLES				